पाठयोजना

महाविद्यालय का नाम — राजनारायण महाविद्यालय, [illegible]

दिनांक — 30-04-2020

कक्षा — स्नातक, द्वितीय खंड (Subsidiary)

विषय — इतिहास

पाठ — मुगल वंश की स्थापना और बाबर की उपलब्धियाँ

कालांश — I

लेखक का नाम — मुकेश कुमार [illegible]

आवश्यक उपकरण —

क्रम	शिक्षण बिन्दु	छात्र-अध्यापक क्रियाएं	श्यामपट्ट
1	परिचय	भारत में मुगल वंश का संस्थापक जहीरुद्दीन मुहम्मद बाबर का जन्म 14 फरवरी 1483 को मध्य एशिया के एक छोटे से राज्य फरगाना में हुआ था उसके पिता का नाम उमरशेख मिर्जा एवं माता का नाम कुतलुगनिगार खां था बाबर अपने पिता तैमूर और माता चंगेज खाँ के वंशज थे अतः बाबर में भी तुर्कों और मंगोल गुणों का अद्भुत सम्मिश्रण पाया जाता है बाबर पिता की ओर से चगताई तुर्क था और माता की ओर से मंगोल वंश से संबंधित था लेकिन उसने अपनी आत्मकथा 'बाबरनामा' में स्वयं को अपनी माँ के वंश के मानने पर जोर दिया, इसलिये उसके द्वारा स्थापित वंश मुगल वंश कहलाया	
2	आरंभिक कठिनाइयाँ	अपने पिता की मृत्यु के पश्चात बाबर 1494 ई० में फरगाना का शासक बना परंतु उसका आरंभिक जीवन काफी कठिनाइयों से भरा था जिस समय बाबर गद्दी पर बैठा उस समय उसकी [illegible]	

तैमूर वंशज बाबर ने अपने पूर्वजों की भाँति ही मध्य एशिया में अपने राज्य फरगाना के पुनः स्थापना किया। फरगाना की स्थिति सुधारने के पश्चात बाबर ने राज्य विस्तार की तरफ ध्यान दिया और उसने 1496-97 ई० में समरकंद पर अधिकार कर लिया किन्तु कुछ महीनों के पश्चात ही समरकंद बाबर के हाथ से निकल गया। समरकंद के पश्चात फरगाना भी बाबर के हाथ से निकल गया और उसे निर्वासित जीवन व्यतीत करना पड़ा। परन्तु इस विकट परिस्थिति में भी बाबर ने अपना धैर्य एवं साहस नहीं खोया।

समरकंद और फरगाना से निराश होकर बाबर ने अफगानिस्तान की तरफ ध्यान दिया और 1504 ई० में बाबर ने काबुल पर अधिकार कर लिया और वहाँ का शासक बन बैठा। इससे बाबर की शक्ति और प्रतिष्ठा में वृद्धि हुई।

काबुल की विजय के पश्चात बाबर ने समरकंद विजय की योजना बनाई और 1512 ई० में बाबर ने ईरान के शाह इस्माईल शफवी की सहायता से समरकंद, बुखारा एवं खोरासान पर अधिकार कर लिया। इस प्रकार बाबर का राज्य समरकंद से लेकर भारतीय सीमा तक फैल गया।

1525 ई० तक बाबर काबुल का शासक बना रहा और अब भारत विजय की योजना एवं तैयारी करने लगा। काबुल में रहकर बाबर भारत की राजनीतिक गतिविधियों पर निगाह रखे हुए थे। यही पर उसे दौलत खाँ, आलम खाँ और राणा साँगा का भारत पर आक्रमण का निमंत्रण मिला।

3. आक्रमण के कारण

भारत पर बाबर के आक्रमण करने के अनेक कारण थे जैसे – बाबर की महत्वाकांक्षा, धन प्राप्ति की कामना, भारत में उसके पूर्वज, बाबर के अमीरों की प्रेरणा, भारत की तत्कालिक राजनीतिक स्थिति और बाबर को आक्रमण का निमंत्रण। इन कारणों ने भारत पर बाबर को आक्रमण के लिए प्रेरित किया

4. भारत पर आक्रमण

बाबर ने भारत पर कितनी बार आक्रमण किए यह एक विवादास्पद प्रश्न है किन्तु स्वयं बाबर पाँच आक्रमणों की बात करता है। जिसमें सर्वप्रथम 1519 ई० में बाबर ने बाजौर के दुर्ग पर आक्रमण कर उस पर अधिकार कर लिया करने पश्चात तीसरा 1519 ई०, 1520, 1524 और पाँचवा और अंतिम आक्रमण 1525 ई० में पंजाब के गवर्नर दौलत खाँ लोदी के विरुद्ध किया लेकिन दौलत खाँ ने आत्मसमर्पण कर दिया।

इसके पश्चात बाबर ने दिल्ली पर नियंत्रण स्थापित करने के लिए बढ़ा और इब

शिक्षक निर्देश

उत्तर दिल्ली पर लोदी वंश के इब्राहिम लोदी का शासन था। 1526 ई० से 1530 तक बाबर के चार महत्वपूर्ण युद्धों पर विजय प्राप्त कर भारत में मुगल वंश की नींव डाल दी। इन युद्धों का विवरण इस प्रकार है! —

① **पानीपत का प्रथम युद्ध (21 अप्रैल 1526)**: — यह युद्ध भारतीय इतिहास के लिए एक निर्णायक युद्ध है। इस युद्ध में एक तरफ बाबर और दूसरी तरफ इब्राहिम लोदी था। इस युद्ध में पहली बार भारत में उजबेकों की युद्ध नीति तुलुगमा पद्धति तथा तोपों का प्रयोग किया गया। इस युद्ध में अंततः इब्राहिम लोदी पराजित हुआ और युद्ध स्थल में ही मारा गया। इस विजय के पश्चात 27 अप्रैल 1526 ई० को बाबर ने अपने आपको पादशाह घोषित कर भारत में मुगल साम्राज्य की स्थापना कर दी।

② **खानवा का युद्ध (16 मार्च 1527 ई०)**: - पानीपत के युद्ध विजय ने बाबर को जहाँ दिल्ली का बादशाह बनाया वहीं खानवा के युद्ध ने उसके विजयों को स्थायित्व प्रदान किया। खानवा के युद्ध का मुख्य कारण बाबर का भारत में रहने का निश्चय था।

मूल्यांकन बिंदु

राणा सांगा ने यह सोचकर बाबर को आमंत्रित किया था कि बाबर लूटकर वापस काबुल लौट जाएगा किन्तु जब बाबर ने भारत में रहने का निश्चय किया तब राणा सांगा उसका विरोधी हो गया। अतः 16 मार्च 1527 ई० को खानवा में बाबर और राणा सांगा के मध्य युद्ध हुआ जिसमें बाबर विजयी हुआ। इस युद्ध के आक्रमणों ने राणा सांगा का अन्त किया था किन्तु पराजय के साथ ही भारत में राजपूतों के हिन्दू राज्य स्थापित करने तथा अफगानों के पुनः दिल्ली की गद्दी प्राप्त करने का स्वप्न सदा के लिए टूट गया। इस युद्ध के पश्चात बाबर की शक्ति का केन्द्र काबुल के स्थान पर दिल्ली हो गया।

③ चन्देरी का युद्ध (1528ई०) :- चन्देरी प्राचीन इतिहास में बाबर के लिए महत्वपूर्ण था। यह मालवा और बुन्देलखण्ड की सीमा पर था तथा मालवा और उत्तर-भारत की मुख्य सड़क यहीं से गुजरती थी। इस समय चन्देरी का शासक राजपूत मेदिनीराय था। 1528ई० में बाबर और मेदिनीराय के बीच युद्ध हुआ जिसमें मेदिनीराय मारा गया और चन्देरी पर मुगलों का अधिकार हो गया।

Scanned with CamScanner

(1) **घाघरा का युद्ध (1529 ई.) :-** यह युद्ध अफगानों और बाबर के मध्य हुआ था। यह बाबर का अंतिम युद्ध था। गंगा की सहायक घाघरा नदी के तट पर 1529 ई० में बाबर और अफगानों (महमूद लोदी) के बीच हुए युद्ध में अफगान पराजित हुए और महमूद लोदी बंगाल भाग गया। मध्ययुगीन इतिहास में घाघरा का युद्ध पहला युद्ध था जो जल और थल दोनों पर लड़ा गया। इस युद्ध के पश्चात अफगानों की शक्ति क्षीण हो गयी। यह युद्ध भारत में बाबर का अंतिम युद्ध था।

इस प्रकार बाबर का साम्राज्य सिन्धु नदी से लेकर बिहार तक और हिमालय से लेकर ग्वालियर तथा चन्देरी तक विस्तृत हो गया। 1530 में जब बाबर बीमार हुआ तो उसने हुमायूँ को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया लेकिन अंततः बीमारी कारण 26 दिसम्बर 1530 को बाबर की मृत्यु हो गयी और उसकी मृत्यु के पश्चात पहले उसे आगरा में और फिर वहाँ से उसकी अस्थियों को ले जाकर काबुल में दफनाया गया।

मुकेश कुमार (…